

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages
April 2023, Issue-100, Vol-03

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

“Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Printing Area



Vidyavarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.



<http://www.printingarea.blogspot.com>

Editorial Board & review Committee

- **Chief Editor**

- **Dr Gholap Babu Ganpat**

Parli_Vajinath, Dist. Beed Pin-431515 (Maharashtra)
9850203295, 7588057695
vidyawarta@gmail.com

- **Dr. Namita Mittal**

Assistant Professor Grade (Guest), Computer Science
Central Sanskrit University, Jaipur Campus, Jaipur
Triveni Nagar, Gopalpura bypass road, Jaipur
Pin 302018 Mob.No. 9413444921

- **Dr. Momin Mujtaba**

Faculty Member, Dept. of Business Admin.
Prince Salman Bin AbdulAziz University
Ministry of Higher Education, Kingdom of Saudi
Arabia, Tel No.: +966-17862370 Extn: 1122

- **N.Nagendrakumar**

115/478, Campus road,
Konesapuri, Nilaveli (Postal code-31010),
Trincomalee, Sri Lanka
nagendrakumarn@esn.ac.lk

- **Dr. Vikas Sudam Padalkar**

vikaspadalkar@gmail.com
Cell. +91 98908 13228 (India),
+ 81 90969 83228 (Japan)

- **Dr. Wankhede Umakant**

Navgan College, Parli –v Dist. Beed
Pin 431126 Maharashtra
Mobi.9421336952
umakantwankhede@rediffmail.com

- **Dr. Basantani Vinita**

B-2/8, Sukhwani Paradise,
Behind Hotel Ganesh, Pimpri,
Pune-17 Cell: 09405429484,

- **Dr. Bharat Upadhya**

Post.Warnanagar, Tq.Panhala,
Dist.Kolhapur-4316113
Mobi.7588266926

- **Jubraj Khamari**

AT/PO - Sarkanda, P.S./Block - Sohela
Via/Dist. - Bargarh, Pin - 768028 (Orissa)
Mob. No. - 09827983437

- **MISS. VARSHA ANILRAO TIDKE**

FULE-AMBEDKAR COLLEGE OF SOCIAL WORK,
HANUMAN NAGAR, REVENUE COLONY, GADCHIROLI
9421857700
varshaatidke21@gmail.com

- **Dr Trushna S Kalambe**

66 Ayodhyanager behind
sai Mandir lane no 2 Nagpur-440024

- **Dr. Ambhore Shankar**

Jalna, Maharashtra
shankar296@gmail.com
Mobi.9422215556

- **Dr. Sumit Prasad**

Professor Colony, Kankarbagh,
PO – Lohia Nagar, Patna – 800 020 (Bihar)
prasadsumit78@gmail.com

- **Prof. Surwade Yogesh p**

Dept. Of Library, Dr B A M U Aurangabad , Pin 431004
Cell No: +919860768499
yogeshps85@gmail.com

- **Dr. Deepak Vishwasrao Patil,**

At.Post.Saundhane, Near
Kalavishwa Computer, Tq.Dist.Dhule-424002.
Mobi. 9923811609
patildipak22583@gmail.com

- **Dr.Vidhya.M.Patwari**

Vanshree Nagar, Behind Hotel
Dawat, Mantha Road, Jalna-431203
Mobi.9422479302
patwarivm@rediffmail.com

- **Dr. Varma Anju**

Assistant Professor, Dept. of Education,
Sikkim University 6th Mile, Samdur Tadong-737102
GANGTOK - Sikkim, (M.8001605914)
anjuverma2009@rediffmail.com

- **Dr. Dinesh Kumar Charan**

Associate Professor and HOD-History Dept.,
Govt.Lohia College Churu (Rajasthan) India
Pin- 331001
Mob. No.-9414305804

INDEX

01) Effect of Experiential Learning (Nai Talim) and Innovative Pedagogical.... Dr. Deepika Kohli, Dr. Debendra Nath Dash, Hyderabad	10
02) Engage Study Activate (ESA) Model of teaching for Story Writing Dr. Prasad Joshi, Dr. Lalita R Vartak, Pune	14
03) A STUDY ON RISING UNEMPLOYMENT AMONG YOUTH WITH SPECIAL.... Dr. Baldev Ram, Twinkle prakash, Haldwani	18
04) Child Rights and protection: A scenario in India Dr. Premchand Gundu Gaikwad, Madha, Dist- solapur	24
05) Planning Consideration for Heritage tourism: A Case Study of Agra Krishna Narwariya, Gwalior (MP)	29
06) SOCIO - CULTURAL LIFE OF SOLIGA TRIBE Dr Manjula K.P, Sagar, Karnataka	35
07) SENTENCING POLICY IN CASES RELATED TO DISHONOUR OF CHEQUE.... Naresh Soma Bari, Prof. Dr. Singh Vijeta Shitalabaksh, Jalgaon (M.S)	41
08) A Study of Financial Sector Reforms in India Dr. Munna Kumar Sharma, Siwan (Bihar)	46
09) साहित्याचे प्रयोजन कोणते? प्रा. डॉ. एच.डी. आकोटकर, खामगांव जि. बुलडाणा	52
10) संशोधनकार्यात इंटरनेटचा उपयोग प्रा. संजय अंकुशराव जगताप, किनगाव, जि. लातूर	54
11) गडचिरोली जिल्ह्याचा परिचय संजय भास्कर मेश्राम, डॉ. जी. जी. गोंडाने, अकोला	57
12) महाराष्ट्रातील वाढती गुन्हेगारी आणि पोलीस प्रशासनाची भूमिका डॉ. कोनेरू बाबन्ना डुमलवाड, हाडोळती, जि. लातूर	61

13) डॉ. पंजाबराव देशमुख यांचे कृषी व शिक्षण विषयक विचार डॉ. बोंडगे एस. जी., बीड	65
14) महात्मा फुले यांचे शेतकरी विषयक विचार प्रा. डॉ. एस.ई. भोसले, कडा जि.बीड	69
15) मराठी कथा वाङ्मय — एक दृष्टी Dr. Sadhna A. Jichkar, Bharsingi, Dist -Nagpur	71
16) बालविवाहाची समस्या : एक अध्ययन प्रा. डॉ. नंदा पंढरीनाथ कंधारे, मारवड, जि. जळगांव	76
17) भारताचे आरक्षण धोरण आणि मराठा आरक्षणाची गरज जाधव संतोष दत्तराम, नांदेड	80
18) महाराष्ट्रातील मृदा संधारण व पाणलोट क्षेत्र विकासाचे महत्त्व..... प्रा. डॉ. जाधव व्हि. डि., बीड.	87
19) अण्णाभाऊ साठे यांच्या कथांमधील वंडखोर नायिका डॉ. भारत सुरेशराव कडबे, काटोल	91
20) भारतीय प्रशासनासमोरील आव्हाने — एक अभ्यास — प्रा. डॉ. नागनाथ वैजनाथ शेवाळे, जालना	96
21) धूमिल के काव्य में राजनीतिक विद्रोह अशोक कुमार मील, अजमेर (राजस्थान)	101
22) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरजी की सामाजिक न्याय अवधारणा डॉ. अवचिते बेंजामिन चार्ल्स, गंगाखेड जि. परभणी	103
23) भारत में महिलाओं के राजनीतिक अधिकार ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रजीना खान, भोपाल	108
24) संप्रति में निर्गुण भक्तकवि शिरोमणि कबीर दास की प्रासंगिकता यशवंत सिंह, नंदासैण, उत्तराखंड	110
25) मोहन राकेश की कहानियों में व्यक्त मानवीय सम्बन्ध पटेल अल्पेष्कुमार बी., राजकोट	115

26) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता प्रा. आर्दे शुभदा शिवाजी, पारनेर, अहमदनगर	118
27) शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों.... डॉ. भगवान दीन, बुद्ध बिलास सिंह, सतना, म. प्र.	120
28) हिन्दी के ललित निबंधकारों में कुबेरनाथ राय का स्थान डॉ. बिपिनभाई एम. पटेल, जूनागढ़	123
29) शास्त्रीय संगीत तथा फिल्म संगीत डॉ. दर्शना, पटना	125
30) राजस्थान की स्वाभिमानि नारी.... डॉ. गणपत सिंह कविया, लोसल (सीकर)	129
31) वैदिक साहित्य में अहिंसा की अवधारणा : उद्भव एवं विकास डॉ. हितेश शर्मा, अलवर	133
32) हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की.... बुद्ध बिलास सिंह, डॉ. भगवान दीन, सतना, म. प्र.	138
33) महार अनुसूचित जाति एवं चयनित अनुसूचित जातियों के आर्थिक विकास..... — डॉ. कुभन खण्डेलवाल, नयन इंगले, इन्दौर म.प्र.	141
34) स्मृति ग्रंथों में नारी डॉ. श्रद्धा हिरकने, राजा खान, निखिल, रायपुर	146
35) निरुक्त में अग्निदेव का बहुआयामी स्वरूप डॉ. अनीता, दयालबाग, आगरा	148
36) महात्मा गांधी और राष्ट्रभाषा हिंदी प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण, लातूर	151
37) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों का अध्ययन हरेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. कौषिक वी. पण्डया, उदयपुर	154
38) मौर्य-शुंग युग की कला में पर्यावरण डॉ. राज कुमार सिंह	159

शक्ति एवं महत्ता को कुछ अंशों में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। निष्कर्षतः कह सकते हैं कि वैदिक साहित्य में अग्नि का अध्यात्मोन्मुख भौतिक स्वरूप वर्णित है जिनका सम्यक् प्रतिपादन निरुक्त में किया गया है।

सन्दर्भ—

१. ऋग्वेद— १०.९१.६
२. अक्नोपनो भवतीति स्थैलाष्टीविः— न क्नोपयति, न स्नेहयति—निरुक्त ७.४
३. 'त्रिभ्य आख्यातेभ्यो जायते इति शाकपूणिः— इताद्, अक्ताद्, दग्धाद् वा, नीतात्। स खल्वेतेरकारमादत्ते, गकारमनक्तेः वा दहतेः वा, नीः परः।' निरुक्त—७.४
४. अग्निभूम्यामोषधीषु अग्निमापो बिभ्रत्यग्निरश्मसु अग्निरन्तः पुरुषेषु गोष्वश्वेष्वग्नयः।।—अथर्ववेद—१२.१.१९
५. 'अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः।' ऋग्वेद—४/५८/८
६.यस्मै हविर्निरूप्यते ऽयमेव सोऽग्निर्जातवेदाः।' निरुक्त—७/५
७. निरुक्त— ७/६
८. निरुक्त—७/७
९. 'संस्कृत में विज्ञान एवं वैज्ञानिकतत्त्व'— इलाहाबाद विश्वविद्यालय—पृ.७१
१०. इदं वर्चो अग्निना दत्तमागन् भर्गो यशः सहभोजो वयो बलम्। त्रयस्त्रिंशद् यानि च वीर्याणि तान्याग्निः प्र ददातु मे।।' अथर्ववेद—१९.३७.१



36

महात्मा गांधी और राष्ट्रभाषा हिंदी

प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण

हिंदी विभाग

राजर्षि शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त), लातूर

“बोलते बोलते एकाएक

मुझे अपनी आवाज पुराने दासों की तरह लगी

मुझे एकाएक लगा कि यह अधीनों की भाषा है

ft | eae | l p jgk gvw | S c | jgk gvw

राजेश जोशी के 'भाषा की आवाज' इस कविता की प्रस्तुत पंक्तियाँ इक्कीसवीं सदी के उस वर्तमान से परिचित कराती हैं जहाँ वैश्वीकरण के महत्वाकांक्षा के दौड़ में व्यक्ति वह सब कुछ 'भौतिक' प्राप्त करने के लिए अपनत्व की उस आवाज को भी गुलाम बना बैठा है। बड़ी विडंबना है कि आज से लगभग सौ वर्ष पहले दासतत्व की राजसत्ता के साथ—साथ उस राजसत्ता की भाषा को भी नकारनेवाले महात्मा गांधी जी के विचारों पर हमने धूल चढ़ा दी है। आज कुरुमुत्ता की तरह उग आये अंग्रेजी स्कूलों के अंग्रेजी माध्यम हमारी बच्चों को नकली बनाते हैं, इस बात से महात्मा गांधी जी ने पहले हमें समझाने की कोशिश की थी— "हम अशिक्षित और अनपढ़ भलें, पर अंग्रेजी की दासता अब हमें स्वीकार नहीं। आज की अंग्रेजी शिक्षा ने हमें नकलची बना दिया है। कोई भी देश नकलचियों की जाति पैदा करके राष्ट्र नहीं बना सकता।"

भाषा किसी भी भाषाई समुदाय को अंदरूनी तौर पर जोड़नेवाली जबरदस्त ताकत होती है। क्योंकि भाषा एक सामाजिक वस्तु के साथ—साथ एक मानसिक संकल्पना भी है। व्याकरणिक इकाई होने के साथ—साथ वह विचार संप्रेषण का माध्यम भी है। भाषा सामाजिक अस्मिता होने के साथ—साथ वह राष्ट्र का प्रतीक भी है। इस बात को महात्मा गांधी जी बेहतर जानते थे। उसमें भारत जैसा देश बहुभाषिक, बहुजातीय और

बहुसांस्कृतिक रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इतनी विविधता होने के बावजूद भी यह देश भाषाई सहिष्णुता का परिचय देता रहा है। जिस देश का जन उसका प्राण और संस्कृति उसकी मानस रही हो वहाँ भाषा कोई अन्य कैसे हो सकती है? क्योंकि भाषा ही उस जन में प्राण फूँककर, संस्कृति की संवाहक बनकर उस राष्ट्र को जिंदा बनाए रखती है। भाषा लोकमानस, लोक संस्कृति और लोक प्रतिष्ठा को आलोकित करती है। राष्ट्र निर्माण में नई पीढ़ी के शिक्षा का माध्यम मातृभाषा नहीं होगी तो यह राष्ट्र की शिक्षा नीति के लिए बहुत बड़ी गलती होगी। महात्मा गांधी जी इस संदर्भ में कहते हैं कि 'मेरा यह विश्वास है कि राष्ट्र के जो बालक अपनी मातृभाषा के बजाय दूसरी भाषा में शिक्षा प्राप्त करते हैं, वह आत्महत्या ही करते हैं। यह उन्हें अपने जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित करती है'³ इसलिए गांधी जी ऐसी राजसत्ता और ऐसी शिक्षा नीति को ही बर्खास्त करना चाहते हैं। उन्हें अपनी मिट्टी और लोकमानस की तरह गढ़ना चाहते हैं। "यदि मुझे निरंकुश राजा की सत्ता मिले तो मैं अपने बालकों को विदेशी भाषा के माध्यम से मिलनेवाला शिक्षण तुरंत बंद कर दूँ और यदि शिक्षकों और अध्यापकों को भी बर्दास्त करना पड़े तो उस हद तक जाकर भी उसे परिवर्तन कराऊँ।"⁴

देश की आजादी के साथ-साथ महात्मा गांधी जी देश की राष्ट्रभाषा और प्रांतीय भाषा सुधार की दृष्टि से बड़े सजग थे। इसलिए हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की दृष्टि से, उसके प्रचार-प्रसार की दृष्टि से 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' की स्थापना मद्रास में कर अपने बेटे देवदास गांधी को हिंदी के प्रचारक के रूप में मद्रास भेजा। राजर्षि पुरुषोत्तम टंडन जी को लिखे गए पत्र में वे लिखते हैं कि 'मेरे लिए हिंदी का प्रश्न तो स्वराज्य का प्रश्न है।'⁵ इस प्रकार हिंदी को स्वराज्य के प्रतीक के रूप में देखना यह हिंदी के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी। 'हिंदी के बिना राष्ट्र गूंगा है'⁶ उनका यह कहना हिंदी कि उस विरासत की जड़ों को महत्व प्रतिपादित करना है, जो युग-युग से इस देश की लोक संस्कृति और लोक मानस की संवाहक रही हो। राष्ट्रभाषा के बिना देश का गूंगा होना

देश की उस 'आवाज' को खोना है जो कभी वह देश अपनी संस्कृति और सभ्यता की दृष्टि से विश्व गुरू कहलाया जाता था। बड़े दुख के साथ यह स्वीकारना पड़ता है कि आज भी देश राष्ट्रभाषा के बिना गूंगा है। जिस राष्ट्रभाषा को लेकर गांधीजी का सपना था, उसे आज तक हमारा संविधान स्वीकार करने में खामोश रहा है।

सन २ फरवरी, १९३५ को ब्रिटिश गवर्नर की कार्यकारिणी में अंग्रेजी की वकालत करते हुए लॉर्ड मेकाले ने कहा था, 'इस समय हमें अपनी और उन लाखों व्यक्तियों के बीच में जिन पर हम शासन करते हैं, दुभाषियों का काम करने वाले लोगों का वर्ग तैयार करने का भरपूर प्रयत्न करना चाहिए। ऐसे भारतीयों का वर्ग जो रक्त और रंग से तो भारतीय हो पर रूचि सम्मति और बुद्धि से अंग्रेज हो।'⁷ मेकाले की यह भविष्यवाणी इक्कीसवीं सदी में सच साबित होती नजर आ रही है। आज हम अंग्रेजी में बोलना हमारी शिष्टता और प्रतिष्ठा समझते हैं। लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि शिष्टता तो हमारी संस्कारों की धुड़ी में निहित होती है। राष्ट्र की बुनियाद राष्ट्र की भाषा और राष्ट्र का भविष्य उन पाठशाला में पढ़ने वाले बालक होते हैं। आज वे ही विद्यालय गुलामी के कारखाने बन गए हैं। अंग्रेजी का मोह मात्र रोजगार नहीं, वह फैशन बन गया है। दरअसल इस प्रकार से अपनी ही भाषा को भूल जाना अपनी भाषिक संस्कार का वध है। इसलिए देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद बीबीसी संवाददाता ने गांधीजी से संदेश देने के लिए कहा तो वे तपाक से बोले, 'दुनिया से कह दो गांधी अंग्रेजी भूल चुका है।'⁸ उनका यह संदेश उन साम्राज्यवादी नीति, देश और भाषा के लिए था, जिसे पूरी दुनिया समझ सके। वे यह स्पष्ट करना चाहते थे कि गांधी अब उन साम्राज्यवादियों की भाषा को नहीं बल्कि उस जनता की भाषा को जानता है, जो स्वतंत्र भारत की है। लेकिन उसी स्वतंत्र भारत की बड़ी विडंबना यह है कि अब हम अंग्रेज नहीं बल्कि अपनी ही मातृभाषा को भूलते जा रहे हैं। मास्को विश्वविद्यालय के प्रोफेसर दिमशिल्स दिल्ली आकर अपना अनुभव बताते हुए कहते हैं कि 'यह एक विचित्र घटना है कि मैंने जिस हिंदी को सोवियत संघ में कठोर परिश्रम से सीखा था,

उसे भारत में आकर भूलता जा रहा हूँ। क्योंकि भारत में कोई हिंदी बोलना नहीं चाहता। अधिकांश शिक्षित लोग अंग्रेजी बोलना ही पसंद करते हैं।”

महात्मा गांधी जी का भाषा नीति का मार्ग मात्र किसी एक भाषा के रूप में हिंदी को ही संपूर्ण देश में थोपकर उसका विकास किया जाए ऐसा कदापि नहीं था। उनके दृष्टिकोण को इस प्रकार से समझना अधूरा सत्य होगा। क्योंकि वह भाषा के आधार पर प्रांत विभाजन को आवश्यक मानते थे। उन्हीं के शब्दों में, ‘प्रांतीय भाषांचा जास्तीत जास्त उत्कर्ष करायचा असेल तर प्रांतांची भाषावार पुनर्रचना आवश्यक आहे. हिंदुस्तानी भारताची राष्ट्रभाषा होईल परंतु ती प्रांतीय भाषांचे स्थान कधीही घेऊ शकणार नाही. भारताबरोबरचे क्षेत्रीय संबंध प्रांतांना समजून देण्याकरिता मदत करणे हे हिंदुस्तानीचे कार्य आहे.’ तात्पर्य यह है कि हिंदी भाषा के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं का विकास करना भी आवश्यक है। वे यह चाहते थे कि भारतीयता एकात्म संबंधों को दृढ़ बनाने में हिंदी की बड़ी जिम्मेदारी हो।

निष्कर्ष रूप में कहा जाए तो महात्मा गांधी जी गुजराती भाषा और अंग्रेजी भाषा में अपने विचार प्रभाव रूप में व्यक्त करते हुए भी हिंदी एवं मातृभाषा पर अधिक बल देना यह उनके स्वराज्य का ही महत्वपूर्ण अंग था। विदेशी भाषा को दासता का प्रतीक मानकर राष्ट्रीय भाषा के प्रति देश को जागृत करना यह देश के लिए राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्र की प्रतिष्ठा के लिए उनका भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान रहा।

संदर्भ ग्रंथ सूची—

१. रजेश जोशी रू प्रतिनिधि कविताएं — रजेश जोशी, रजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली— ०२, पहला संस्करण २०१३, पृष्ठ १३६
२. भारतीय राष्ट्रभाषा रू सीमाएँ और समस्याएँ — डॉ. सत्यव्रत, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण १९७९, पृष्ठ ४३
३. वही, पृष्ठ १३
४. वही, पृष्ठ ४३
५. नया ज्ञानोदय दू संपा. लीलाधर मंडलोई, सितंबर २०१५, पृष्ठ ११
६. मेरी हिंदी मेरी शान दू संपा. राघवेंद्र ठाकुर,

जे.एम. डी पब्लिकेशन, नई दिल्ली— १८, प्रथम संस्करण २००१, पृष्ठ ४९

७. भारतीय राष्ट्रभाषा रू सीमाएँ और समस्याएँ — डॉ. सत्यव्रत, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण १९७९, पृष्ठ २३

८. राजभाषा हिंदी : समस्याएँ एवं समाधान — शशि नारायण, समाधान क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली— १५ प्रथम संस्करण २००४, पृष्ठ ९३

९. भारतीय राष्ट्रभाषा रू सीमाएँ और समस्याएँ — डॉ. सत्यव्रत, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण १९७९, पृष्ठ २४

१०. महात्मा गांधींचे विचार — संपा. आर. के. प्रभू आणि यु. आर. राव, अनु. बिजमोहन हेडा, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद, द्वितीय संस्करण २०११, पृष्ठ ४९८

